The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-04, Issue-01, April-2025
www.theresearchdialogue.com

“भगिनी निवेदिता के शैक्षिक दर्शन का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता”

शोधार्थी
सर्वेश कुमार
शिक्षासंकाय
डॉ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या

शोध निर्देशिका
डॉ० चमन कौर
सहायक प्रोफेसर, बी०एड० विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज गोंडा

सारांश,

सिस्टर निवेदिता को भारत के नवजागरण के लिए शामिल लोगों में अग्रणी माना जाता है। उन्होंने विदेश की धरती से आकर भारत में अशिक्षा, सामाजिक कुरीतियों, अन्धविश्वास एवं धार्मिक सुधार आदि के क्षेत्र असाधारण कार्य किया। निवेदिता जी ने स्वामी विवेकानन्द जी को अपना आदर्श माना। स्वामी जी ने उनके त्याग और समर्पण के लिए उनको नया नाम ‘‘निवेदिता’’ दिया। तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने उनके निःस्वार्थ कार्यों को देखकर उन्हें ‘‘लोकमाता’’ की उपाधि प्रदान की। उन्होंने असामान्य शिक्षण विधि का प्रयोग किया। एक कुशल शिक्षिका के रुप में कार्य किया। लोगों को नारी शिक्षा के महत्व के बारे में समझाना और अभिभावकों का मनाना एक पहाड़ तोड़ने के समान कार्य था, लेकिन निवेदिता जी ने अपने धैर्य का परिचय देते कुशलता से इस कार्य को पूरा किया।

मुख्य शब्द–*शैक्षिक दर्शन*

दर्शन शिक्षा का एक मार्गदर्शक या सैद्धांतिक पक्ष है। तथा शिक्षा दर्शन का व्यावहारिक या क्रियात्मक पक्ष है। अतः दर्शन शिक्षा के सम्पूर्ण भाग जैसे पाठ्यचर्या, शिक्षणविधि,अनुशासन, शिक्षक, शिष्य, शिक्षक–शिष्य सम्बन्ध , स्कूल का प्रबन्धन एवं प्रशासन, नारी–शिक्षा, जनशिक्षा आदि को बहुत गहनता से प्रभावित करता है। व्यक्तिगत भिन्नता के कारण समस्त दार्शनिकों में अपने–अपने दार्शनिक भिन्नता पाई जाती है। आज तक कई दार्शनिक हुए जिन्होने अपने समय की स्थिति एवं परिस्थिति के अनुसार शिक्षा में काफी परिवर्तन किया

इन्ही दार्शनिकों ने भगिनी निवेदिका जी का नाम अग्रणी रुप से आता है। जिन्होनें एक दार्शनिक के साथ–साथ कुशल शिक्षिका, समाज सुधारक, नवजागरण के अग्रदूत, नारीवादी विचारक, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रुप में अपने कर्तव्यों का शत–प्रतिशत निर्वाहन किया।

भगिनी निवेदिता जी का वास्तविक नाम– मार्गरेट एलिजाबेथ नोबल था, जो एक आयरिश महिला थी। इनका जन्म 28 अक्टूबर 1867 ई0 को आयरलैण्ड के एक शहर डॉन गैगन में हुआ था। इनके पिता का नाम सेमुअल रिचमण्ड तथा माता का नाम मेरी इसाबेल्ट था। माता एक धार्मिक महिला थी वातावरण का प्रभाव व्यक्तित्व पर हमेशा पड़ता है। इनके माता–पिता के धार्मिक प्रवृत्ति होने के कारण निवेदिता जी भी एक धार्मिक विचारधारा की थी। हांलाकि इनको धार्मिक परम्पराओं को मानने में कुछ समस्या जरुर होती थी क्योंकि वह बचपन से ही एक तार्किक विद्यार्थी रही थी। तो किसी भी विचार व विश्वास को तर्क के कसौटी पर बिना कसे उन्हे स्वीकार नहीं करती थी। वह किसी विचार को इसलिए नहीं स्वीकार कर लेती थी कि यह उनके ग्रंथो में लिखा गया है बल्कि तर्क से सही या गलत से उस विचार को स्वीकार करती थी।

शैक्षिक जीवन देखा जाये तो उनकी प्रारंभिक शिक्षा एक आवासीय विद्यालय में हुआ था। तत्पश्चात उच्च शिक्षा के लिए उन्होंने हेलीफेश महाविद्यालय में प्रवेश लिया, उसके बाद केसविक स्कूल में शिक्षिकीय प्रशिक्षण प्राप्त किया। तद्उपरांत रेक्सहेम विद्यालय में शिक्षिका के पद पर नियुक्ति हुई। इस बीच स्विस शिक्षा शास्त्री पेस्टालॉजी और जर्मन शिक्षा शास्त्री फ्रोबेल से काफी प्रभावित हुई। बाद में विंबलडन में अपना स्कूल शुरु किया।

शिकागो के विश्वधर्म सम्मेलन 1893ई0 में निवेदिता जी ने स्वामी विवेकानन्द जी के विचारों को सुना तब स्वामी जी के संवाद एवं तर्क से निवेदिता जी काफी प्रभावित हुई। स्वामी जी के विलक्षण गुणों के कारण लेडी मार्गसन ने अपने घर पर आमंत्रित किया ताकि धर्म की गूढ़तम रहस्यों का समझ सके। कुछ शंकाओ का समाधान कर सकें, उसी समय वहां निवेदिता जी को भी आमंत्रित किया गया था। क्योंकि निवेदिता जी की गिनती एक विशेष बुद्धिजीवियों में की जाती थी। उनके लेख प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं में छपते थे। उस समय वह सीसेम क्लब की एक सक्रिय सदस्य भी थी। वहां स्वामी विवेकानन्द जी से मिलने के बाद वह उनसे बहुत प्रभावित हुई जिससे उन्होने स्वामी जी को अपना आध्यात्मिक गुरु स्वीकार कर लिया। स्वामी जी के आह्वान पर निवेदिता जी अपना सबकुछ त्याग कर 28 जनवरी 1898 को भारत आ पहुंची। कुछ दिनों बाद 25 मार्च 1898 को शुक्रवार के दिन स्वामी जी उन्हे ब्रहमचर्य की दीक्षा दी और एक नया तथा सार्थक नाम प्रदान किया। वह था ''निवेदिता'' अर्थात जो समर्पित की गई हो। इस प्रकार उनका नाम मार्गेट से निवेदिता पड़ गया।

भारत में रहकर निवेदिता जी ने पूर्ण रुप से भारतीयता को स्वीकार कर लिया। यहां की संस्कृति, सभ्यता, भाषा, पहनावा, यहां तक की देश की समस्या को ही अपने समस्या के रुप में स्वीकार कर लिया। उस समय देश अंग्रेजों का गुलाम था चारो तरफ भुखमरी, नफरत, असामजिकता, अशिक्षा, सामाजिक कुरीतियां फैली हुई थी। इन सब का मूल कारण निवेदिता जी ने शिक्षा का विकास न होना स्वीकार किया। इस लिये

निवेदिता जी ने शिक्षा को सर्वाधिक महत्व देते हुए अन्य कई क्षेत्रो में भी देश के लिए महत्वपूर्ण कार्य किये। जो निम्नलिखित है।

शिक्षा के उद्देश– भारत का भविष्य शिक्षा पर निर्भर करता है। शिक्षा राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि राष्ट्र के निर्माण कारी होनी चाहिए। देश को अंग्रेजो के गुलामी से मुक्त कराने का सबसे अच्छा विकल्प देशवासियों में राष्ट्र की भावना का विकास करना था। निवेदिता जी बड़े–बड़े सभाओ में शामिल होती और अपने जोशीले भाषणों से भारतवासियों को राष्ट्र की भावना से ओत–प्रोत कर देती थी। 1905ई0 को हुई बनारस के भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस सभा जैसे बड़े मंचो में भी शामिल हुई थी।

देश के शिक्षा के विकास के लिए निवेदिता जी एक नवीन योजना प्रातिपादित करती है। शिक्षा के व्यापक प्रसार–प्रचार के अभियान के लिए **शिक्षा के सेना** (आर्मी ऑफ एजुकेशन) संगठित करने की योजना प्रस्तुत करती है। आधुनिक समय में जिस प्रकार **अग्निवीर योजना** देश की सुरक्षा में लाई गई, क्योंकि इस प्रकार की योजनाएं कई पाश्चात्य देशो में पहले से देखने को मिलती थी। जो सफल भी रही थी।

उन्होंने चरित्र का निर्माण को शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य माना उनके अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो सत्य, त्याग, और सेवा के गुणो को विकसित करे। शिक्षा का लक्ष्य सम्पूर्ण मानव का विकास है। जैसे शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक विकास है। उनकी दृष्टि में शिक्षा ह्रदय, आत्मा और मस्तिष्क की उन्नति का साधन है। शिक्षा का उद्देश्य बाह्य ज्ञान अथवा शक्ति का संचय करना नहीं बल्कि अपने भीतर की शक्ति को विकसित करना है।

भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा– निवेदिता जी को समझने के लिए स्वामी विवेकानन्द जी को समझना अत्यंत आवश्यक है। क्योंकि स्वामी जी निवेदिता जी के गुरु थे। निवेदिता उन्ही के आदेशों का पालन करती थी इसलिए स्वामी जी के विचारों का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। निवेदिता जी भारत की शताब्दियों पुरानी सांस्कृतिक आध्यात्मिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं दार्शनिक इतिहास को समुद्र की तरह अथाह गहरा मानती थी। भारत के इतिहास और संस्कृति का जिसका वर्णन तात्कालिक इतिहासकारों ने जो वर्णन किया है। और जो पाश्चात्य के इतिहासकारों एवं समीक्षकों में जानकारी उपलब्ध कराई है। वह या तो अल्प है या उसमें हेरफेर किया गया है। इसलिए निवेदिता जी उन ग्रन्थों पर कम विश्वास करके भारत के कई ऐतिहासिक स्थलों पर भ्रमण के माध्यम से जो जानकारी प्राप्त की वही देश की वास्तविक संस्कृति मानती है। और उसी भारतीय संस्कृति को स्वीकार एवं आत्मसात करती है। अपने गुरु स्वामी जी के साथ देश के कई भागों की यात्रा निवेदिता जी ने की जैसे अमरनाथ की यात्रा, दार्जिलिंग, केदारनाथ, अजन्ता, एलोरा एवं भारत के कई पूर्वोत्तर राज्यों की यात्रा की।

नारी शिक्षा– निवेदिता जी मुख्य रुप से एक फेमिनिस्ट के रुप में जानी जाती है जो की अजीवन नारी शिक्षा के लिए कार्य करती रही है। भारत में नारी की अशिक्षा की स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए बहुत ही दुःखी हुई। भारतीय समाज का कही न कही यह दुर्भाग्य था कि नारी का दायरा केवल आंगन व रसोई तक था इन बेड़ियों को तोड़ना बहुत जरुरी था निवेदिता जी उनको शिक्षित करना चाहती थी जिससे वह अपना जीवन निर्वाह कर सके अपने पैरों पर खड़ी हो सके। और अशिक्षा की दलदल से बाहर निकल सके। इसके

लिए स्वामी जी के प्रेरणा निर्देश एवं मार्गदर्शन निवेदिता जी को समय समय पर मिलते रहते थे। उन्ही के आदेश के पर निवेदिता जी ने महिलाओं को शिक्षित करने के लिए कलकत्ता बाग बाजार के बासपाड़ा लेन में बालिकाओं के लिए एक विद्यालय खोला। तात्कालिक समय में भारतीय समाज में कन्याओं की शिक्षा को आवश्यक नहीं माना जाता था। ऊपर से यह विद्यालय एक विदेशी महिला द्वारा निर्मित किया गया था। इसलिए अभिभावकों को यह संदेह था कि हमारी बच्चियों के मन से भारतीय संस्कृति को नष्ट करके पाश्चात्य सस्कृति का प्रचार–प्रसार कर रही है। इस समस्या के समाधान के लिए निवेदिता जी लोगों के घर–घर जाकर उन्हे नारी शिक्षा के महत्व के बारे में समझाती और मनाती थी। धीरे–धीरे अभिभावक अपने संतानों को स्वतः ही उनके विद्यालय में भेजने लगी। निवेदिता जी ने विद्यालय में छात्राओं के आचार–व्यवहार, भाषा, वेश–भूषा, शिक्षा संगीत आदि के माध्यम से राष्ट्रीयता की भावना का विकास किया जिससे वे देश के विकास में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान कर सकें।

उन्होंने बच्चियों को भारत की महिला विभूतियों जैसे पदम्नी, चांदबीबी, झांसी की रानी आदि वीरांगना तथा रानी भवानी और अहल्याबाई कुशल प्रशासक, मीराबाई महान भक्त एवं कवयित्री। सती, सीता एवं सावित्री में वैवाहिक जीवन के प्रति अप्रतिम ईमानदारी एवं निष्ठा आदि से परिचित कराया जिससे वे अपने संस्कृति को जान सकें और उस पर गर्व कर सकें।

शिक्षक की भूमिका– शिक्षक किसी राष्ट्र का निर्माता होता है। निवेदिता जी का मानना है कि शिक्षक के गुणों का प्रभाव शिष्य पर पड़े बिना नही रह सकता है। इस लिए शिक्षक को स्वयं को एक आदर्श के रुप में व्यक्त करना होता है। वह स्वयं एक चरित्रवान, समर्पित एवं राष्ट्रप्रेमी हो जो अपने गुणो का स्थानान्तरण अपने शिष्यों में कर सकें।

शिष्य केवल सूचना देने वाला नहीं होता बल्कि छात्रों में चिन्तन एवं तर्क की परिस्थिति उत्पन्न करने वाला होता है। उन्होंने एक शिष्य के रुप में कभी भी बिना तर्क एवं चिन्तन के किसी बात को स्वीकर नही किया चाहे स्कूली जीवन के दौरान अपने गुरु से मिली जानकारी हो या फिर स्वामी विवेकानन्द जी की शिक्षा से प्राप्त ज्ञान हो वह कभी–कभी स्वामी जी के बातो से असहमत हो जाती थी तो, जब तक स्वामी जी उसे तर्क के माध्यम से नही समझाते तब तक निवेदिता जी उसे स्वीकार नही करती थी। उनका मानना था शिक्षक शिष्य को शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरित करे और एक कुशल मार्गदर्शक के रुप में अपने कार्यो का निर्वाहन करें।

आध्यात्मिक शिक्षा– निवेदिता जी के शिक्षा का मुख्य उद्देश्य ही था आध्यात्मिक और नैतिक विकास उनके अनुसार आध्यत्मिक विकास का तात्पर्य आत्म–पहचान करना मूल्यो एवं चरित्र का निर्माण करना। आध्यत्मिक शिक्षा से इनका तात्पर्य किसी बाहय ऊर्जा या अस्तित्व से नहीं बल्कि व्यक्ति में पहले से मौजूद सम्पूर्ण गुणो का विकास एवं व्यक्तिकरण है।

राष्ट्रीयता एवं शिक्षा– तात्कालिक समय में देश कई प्रांतो एवं समुदाय धर्म, संप्रदाय आदि में बंटा हुआ था देश में बहुत ही विविधता थी। देशवासियों में राष्ट्र की भावना का विकास करना एक दुर्गम कार्य था। लेकिन निवेदिता जी ने इसके लिए अथक कार्य किया। समय समय पर सभाओं में शामिल होती और अपने भाषणों

से सब में राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न कर देती थी। इस साथ–साथ कई पत्र–पत्रिकाओं में अपने लेख भी लिखा करती थी। अपने विद्यालय में राष्ट्रीयता के विकास के लिए काफी कार्य किया। उनका मानना था कि शिक्षा के माध्यम से भारतवासी अपने गौरवशाली अतीत से परिचित हो और देश के लिए समर्पित नागरिक बने।

व्यावहारिक एवं प्रायोगिक शिक्षा– निवेदिता जी न केवल सैद्धांतिक शिक्षा का समर्थन किया बल्कि उन्होंने व्यावहारिक एवं प्रायोगिक शिक्षा का विशेष बल दिया। जैसे कि हस्तकला, विज्ञान, स्वास्थ्य और स्वावलंबन शिक्षा का जोर दिया। उन्होने शिक्षण पद्धति में क्रियाशीलता पद्धति (एक्टिव बेस्ड लार्निंग) और अनुभवात्मक ज्ञान (एक्सपीरियंसल लर्निंग) पर जोर दिया।

इस प्रकार की शिक्षा की उस समय काफी आवयश्यकता भी थी क्योंकि भारत साक्षरता बहुत कम थी। लगभग लोग कृषि पर निर्भर थें। बेरोजगारी चरम पर थी। इस प्रकार की शिक्षा के द्वारा लोगो के जीवन निर्वाहन आसान बना सकते थें। और देश के साक्षरता बढ़ा सकती थी।

निष्कर्ष– निवेदिका जी के शैक्षिक दर्शन तात्कालिक समाज की मांग के साथ–साथ आवश्यकता को पूरा करती है। भारतीय में जो कुरीतियां थी उसको समाप्त करने का अथक प्रयास किया गया। देश में नवजागरण का प्रयास किया गया इन सब में सबसे महत्वपूर्ण कार्य महिलाओं की शिक्षा की स्थिति के उत्थान के क्षेत्र में किया गया था। महिलाओ को शिक्षा प्रदान किया गया। निवेदिता जी का दर्शन अध्यात्मिकता संस्कृति और राष्ट्रप्रेम त्रैविधिक स्तंभो पर आधारित है। निवेदिता जी भारतीय संस्कृति समुद्र की तरह अथाह गहरा बताया है। और आध्यात्मिकता को स्वयं से परिचित कराना बताया है। और राष्ट्र प्रेम जो देश को आजादी प्राप्त करा सके।

उनका शैक्षिक दर्शन उन भारतीयों के लिए काफी महत्वपूर्ण था जो अपनी देशी संस्कृति का त्याग कर पाश्चात्य संस्कृति की और बढ़ रहे थें। उनको पाश्चात्य संस्कृति के अन्धानुकरण से हटाकर एक मौलिक स्वदेशी और सशक्त भारतीय संस्कृति की और लाने में सफलता प्राप्त करा सके।

सन्दर्भ–

ओम प्रकाश वर्मा, ''*भगिनी निवेदिता और भारतीय नवजागरण*' विद्या विहार दिल्ली 2024।

सिस्टर निवेदिता,''*नोट्स आफ सम वन्डरिंग्स स्वामी विवेकानन्द*'' अद्वैत आश्रम, कलकत्ता 1963।

सिस्टर निवेदिता, ''*हिण्ट्स ऑन नेशनल एजुकेशन*'' अद्वैत आश्रम, कलकत्ता 1966।

सिस्टर निवेदिता, ''*द मास्टर एज आई सा हिम*'' अद्वैत आश्रम कलकत्ता 1963।

सिंह राणा प्रताप, ''*भगिनी निवेदिता*'' राष्ट्रधर्म पुस्तक प्रकाशन लखनऊ 1977।

सिस्टर निवेदिता, ''*काली द मदर*'' थॉमसन एण्ड को0, मिनेरवा प्रेस मद्रास 1972।

सिस्टर निवेदिता,''*क्रेडल टेल्स ऑफ हिन्दुइज्म*'' थॉमसन एण्ड को0, मिनेरवा प्रेस मद्रास 1972

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed /Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-04, Issue-01, April-2025
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number April-2025/17
Impact Factor (RPRI-4.73)

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

सर्वेश कुमार और डॉ० चमन कौर

for publication of research paper title

"भगिनी निवेदिता के शैक्षिक दर्शन का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-04, Issue-01, Month April, Year-2025.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY